3

रिमझिम शृंखला और लैंगिक समानता

लता पाण्डे *

भाषा और साहित्य की पढ़ाई का एक मुख्य उद्देश्य संवेदनशीलता का विकास करना होता है। इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए एन.सी.ई.आर.टी द्वारा विकसित प्राथमिक स्तर की हिंदी की पाठ्यपुस्तकों में लैंगिक समानता के दृष्टिकोण का विकास करने वाली विषय सामग्री का समावेश तो किया ही गया है, साथ ही अभ्यास भी बच्चों में लिंग आधारित सकारात्मक दृष्टिकोण के विकास में सहायक है। रिमझिम शृंखला में लैंगिक समानता के मुद्दे को किस प्रकार से पिरोया गया है, जानने के लिए पढ़िए यह लेख।

संविधान के अंतर्गत धर्म, जाति, वंश और लिंग आदि आधारों पर सबको समानता का अधिकार दिया गया है। स्वतंत्र भारत में बदलते समाज के साथ महिलाओं की स्थिति में भी बदलाव आया है। उनकी साक्षरता दर बढ़ी है, वे आत्मनिर्भर हुई हैं, प्रत्येक कार्यक्षेत्र में उन्होंने अपनी पहचान बनाकर यह सिद्ध कर दिया है कि समान अवसर मिले तो वे आसमान की बुलंदियों को छू सकती हैं। लेकिन इन बदलावों के बावजूद महिलाओं को लेकर हमारी सामाजिक मान्यताओं, परंपराओं, मानक व्यवहारों और सोच में अपेक्षित बदलाव नहीं आया है।

लिंग आधारित भेदभाव जनित रूढ़िग्रस्त मानसिकता में बदलाव लाना एक चुनौती है। इस चुनौती का सामना शिक्षा व्यवस्था में सुनियोजित बदलाव लाकर किया जा सकता है। इसके लिए अनेक प्रयास भी किए जा रहे हैं। सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत बालिका शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। बीच में ही शाला त्यागने वाली बालिकाओं के लिए कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय जैसी योजना की शुरुआत भी की गई है। पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तकों में भी इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखा जा रहा है कि लैंगिक समानता के दृष्टिकोण का विकास करने वाली विषय सामग्री का समावेश इनमें किया जाए।

पाठ्यपुस्तक में बच्चों में लैंगिक समानता का विकास करने वाली विषयसामग्री का समावेश हो तो निश्चित रूप से स्वस्थ मानसिकता लेकर बच्चों का विकास होगा। इसका कारण यह है कि पाठ्यपुस्तकें ही एकमात्र ऐसा साधन हैं, जो विद्यालय जाने वाले प्रत्येक बच्चे को सुलभ होती हैं और पाठ्यपुस्तकें ही एकमात्र ऐसा

* प्रवाचक, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

संसाधन है जो शिक्षण प्रक्रिया के दौरान प्रत्येक शिक्षक के पास भी उपलब्ध होता है। शिक्षक भले ही शिक्षण प्रक्रिया के दौरान किसी भी सहायक सामग्री का उपयोग न करे पर पाठ्यपुस्तक का उपयोग तो प्रत्येक शिक्षक करता ही है।

बच्चों में किसी भी प्रकार के मूल्यों के विकास में भाषा की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। भाषा किसी भी संस्कृति में मूल्यों को बनाए रखने का कार्य करती है। इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली द्वारा विकसित हिंदी की प्राथमिक स्तर की पाठ्यपुस्तकें *रिमझिम शृंखला* में बालक-बालिकाओं के स्वर समान रूप से मुखरित हुए हैं।

आमतौर पर पाठ्यपुस्तकों में लड़कों को साहसी कार्य करते, अपनी विवेकशीलता का परिचय देते, निर्णय लेते दर्शाया जाता है। और लड़कियों के कार्यक्षेत्र का दायरा घरेलू कार्यों, उनकी दूसरों पर निर्भरता, उनमें निर्णय लेने की क्षमता का सर्वथा अभाव ही दिखाया जाता है। *रिमझिम शृंखला* ने इस परंपरा को तोड़ा है। *रिमझिम* की विभिन्न रचनाएँ और उनके अभ्यासों में आए बालिका पात्र वे सब कार्य करती हुई दिखती हैं जो कि उनके समवयस्क बालक करते हैं।

रिमझिम-3 की पंजाब की लोककथा 'बहादुर बित्तो' अपनी सूझ-बूझ और हिम्मत का परिचय देती हुई शेर पर काबू पाती है। *रिमझिम-5* की तिब्बती लोककथा 'राख की रस्सी' की लड़की अपने विवेक चातुर्य से सबको चकित कर देती है। 'बहादुर बित्तो' लोककथा के पश्चात् अभ्यास के अंतर्गत एक प्रश्न है- बित्तो की हिम्मत तुम्हें कैसी लगी? अगर तुम बित्तो की जगह होती तो शेर से कैसे निपटतीं? यह सवाल निश्चय ही कक्षा की सभी बालिकाओं को प्रश्न का उत्तर तो विचारने का अवसर देगा ही, बहादुर बित्तो की तरह ही कुछ वीरता के कारनामे करने की सोच भी उनमें उपजाएगा।

'बहादुर बित्तो' कथा के अंतर्गत ही अभ्यास दिया गया है। कई जगहों पर गाँवों में औरतें खेतों में भी काम करती है। तुम्हारे आस-पास

की औरतें और लड़कियाँ क्या-क्या काम करती हैं? यह अभ्यास कक्षा के सभी बच्चों का ध्यान महिलाओं द्वारा किए जाने वाले कार्यों की ओर आकृष्ट कर अत्यंत सहजतापूर्वक नन्हे हृदयों में महिलाओं द्वारा किए जाने वाले श्रम और उनके कार्यों के प्रति श्रद्धा तथा गौरव का भाव विचरित करने में समर्थ है।

इन लोकथाओं को पढ़ने के बाद नन्हे पाठकों के हृदय में स्वत: ही यह सोच विकसित होगी कि महिलाएँ बहादुरी में किसी से कम

नहीं हैं।

घर में निर्णय लेने का कार्य अकसर पुरुष सदस्य ही लेते है, लेकिन *रिमझिम-4* में सम्मिलित कविता 'उलझन' में माँ, चाची और दीदी को भी अपनी बात कहने का अवसर मिला है। कविता की कुछ पंक्तियाँ-

पापा कहते बनो डॉक्टर
माँ कहती इंजीनियर।
भैया कहते इससे अच्छा
सीखो तुम कंप्यूटर।
चाचा कहते बनो प्रोफेसर
चाची कहती अफसर।
दीदी कहती आगे चलकर
बनना तुम्हें कलक्टर।

रिमझिम शृंखला की रचनाएँ भाषा शिक्षण के दौरान दूसरों के प्रति खासकर असमानता, समता या पृष्ठभूमि के अंतर के संदर्भ में बच्चों को संवेदनशील बनाने के अवसर भी देती है। *रिमझिम-4* की 'सुनीता की पहिया कुर्सी' और *रिमझिम-5* की 'जहाँ चाह वहाँ राह' जैसी रचनाएँ इसी उद्देश्य की पूर्ति करती हैं। 'जहाँ चाह वहाँ राह' की इला अपने पैरों से कसीदाकारी कर हिम्मत की अनूठी मिसाल नन्हे पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करती है।

आमतौर पर घरेलू कार्यों जैसे खाना बनाना, कपड़े धोना आदि लड़कियों के ही कार्य समझे जाते हैं और लड़कों को इनसे कोसों दूर रखा जाता है लेकिन *रिमझिम* में बच्चे मिलकर सारे कार्य करते हैं। 'थप्प रोटी, थप्प दाल' (*रिमझिम-4*) में बच्चे मिलकर दाल-रोटी बनाते हैं और भरपूर आनंद उठाते हैं। *रिमझिम-4* में

ही 'थप्प रोटी थप्प दाल' नाटक के बाद एक अभ्यास है- तुम्हारे घर में खाना कौन बनाता है? तुम खाना बनाने में क्या-क्या मदद करते हो? नीचे दी गई तालिका में लिखो।

रिमझिम-3 में एक अभ्यास दिया गया है- रोटी बनाने के लिए कितना कुछ काम करना पड़ता है जैसे सानना, बेलना आदि। पता करो और लिखो कि इन्हें बनाने के लिए क्या करना पड़ता है-

- चाय बनाने के लिए
- सब्जी बनाने के लिए
- दाल बनाने के लिए
- हलवा बनाने के लिए
- लस्सी बनाने के लिए

इस अभ्यास को हल करने के लिए कक्षा के सभी बच्चों को स्वत: ही इनकी जानकारी प्राप्त हो जाएगी।

रिमझिम -5 की तिब्बती लोककथा 'राख की रस्सी' का एक सवाल है -

- इस लड़की का तो सभी लोहा मान

गए। है न सचमुच नहले पर दहला। तुम्हें भी यही करना होगा।

रिमझिम-3 में एक अभ्यास के अंतर्गत बच्चों से पूछा गया है- तुम घर के कौन-से काम करते हो? अपने कामों के बारे में बताओ।

रिमझिम-2 की कहानी 'मेरी किताब' की वीरू सभी नन्ही पाठिकाओं के दिलों में पढ़ने के प्रति रुझान जगाती हुई यह संदेश दे जाती है कि अवसर मिले तो विभिन्न रंग-बिरंगी किताबें पढ़ना सभी बच्चों को समान रूप से अच्छा लगता है।

इस प्रकार *रिमझिम शृंखला* की विषय सामग्री लिंग आधारित पूर्वाग्रहों से मुक्त है। *रिमझिम शृंखला* की विषयसामग्री और उनके साथ दिए गए अभ्यासों में ऐसे अवसर भरपूर मात्रा में मिलते हैं, जिनसे बच्चों में लैंगिक समानता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित किया जा सके। आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षक इन अवसरों का सही ढंग से उपयोग करें।

❑❑❑